



e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJRSET

International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 11, Issue 12, December 2022

ISSN INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 8.118

9940 572 462

6381 907 438

ijirset@gmail.com

www.ijirset.com

मूक - बधिर बालक - बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

¹डॉ. अजय कुमार दुबे, ²दीपिका

¹प्रोफ़ेसर, तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर (उत्तर प्रदेश), भारत

²M.A., M.Ed, नामांकन संख्या- P.U.

सार

मूक-बधिर बालक-बालिकाओं के कुल समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा। (क) प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम से मूक-बधिर विद्यार्थियों के समायोजन क्षमता की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। (ख) समायोजन के विभिन्न पक्षों गृह समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, संवेगात्मक समायोजन और सामाजिक समायोजन चारों पक्षों की पहचान की जा सकती है। सरकारी स्कूलों में मूक-बधिर श्रेणी के बच्चे भी पढ़ने रहे हैं। लेकिन इनको पढ़ाने के लिए विभाग में योग्य शिक्षकों की भारी कमी है। यही वजह है कि इन विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को शिक्षा देने पर किसी का ध्यान नहीं है। ध्यान रहे कि मूक, बधिर बच्चों के लिए विशेष अध्यापकों की व्यवस्था की जाती है, जो उन्हें इशारों में बोलने, पढ़ने का प्रशिक्षण देते हैं। जानकारी के अनुसार इन्हें सांकेतिक भाषा में पढ़ाने के लिए सीडब्ल्यूएसएन कैटेगरी के शिक्षकों की नियुक्ति की जाती है। इसके लिए विशेष कक्षाएं भी लगाई जाती हैं। मगर टिमरनी विकासखंड ही नहीं बल्कि पूरे हरदा जिले में इसे पढ़ाने के योग्य शिक्षकों का अकाल है। इस कारण इन बच्चों को उचित शिक्षण नहीं मिल पा रहा है। उल्लेखनीय है कि इस विकासखंड में संचालित 273 स्कूलों में विशेष आवश्यकता वाले 275 बच्चे शामिल हैं। इसमें बालक 129 तथा बालिका 146 हैं, जिन्हें सीडब्ल्यूएसएन कैटेगरी वाले शिक्षकों की दरकार है। वर्तमान समय में इन्हें सामान्य बच्चों के साथ ही पढ़ना पड़ रहा है। जबकि उनके लिए पृथक से व्यवस्था की जाना चाहिए। मूक-बधिर और दृष्टि बाधित बच्चों के लिए विशेष कक्षाएं लगाई जाती हैं। इनके लिए ब्रेल लिपी में विशेष स्पर्श पुस्तिका और इशारों में समझने समझाने की व्यवस्था संबंधी इंतजाम होते हैं। मगर संपूर्ण जिले में ऐसे इंतजाम का कोई पता नहीं है। यही वजह है कि इसके लिए चिन्हित किए गए बच्चों को योग्य प्रशिक्षण नहीं मिल पा रहा है। जानकारी के मुताबिक टिमरनी में संचालित 273 में से एक भी ऐसा स्कूल नहीं है, जहां इन विशेष बच्चों के लिए कक्षाएं लगाई जाती हों। कभी-कभार यहां ऐसे विशेष शिक्षकों की पदस्थापना हो भी जाती है तो वे अपना तबादला कराकर बाहर चले जाते हैं। यही वजह है कि यहां पढ़ने वाले ऐसे बच्चों को उचित प्रशिक्षण नहीं मिल पाता है।

भौगोलिक रूप से, सांकेतिक और मौखिक भाषाओं के उपयोग के क्षेत्र हमेशा मेल नहीं खाते। रूसी गतिज भाषण यूक्रेन, बेलारूस, इज़राइल के क्षेत्र में व्यापक है। प्यूर्टो रिको में, बधिर लोग अमेरिकी इशारों का उपयोग करते हुए संवाद करते हैं, जबकि सुनने वाले लोग स्पेनिश का उपयोग करते हैं।

विभिन्न देशों के बहरे और गूंगे लोग कैसे संवाद करते हैं? आखिरकार, जो कोई ब्रिटिश सांकेतिक भाषा बोलता है, उसके लिए अमेरिकी विदेशी के समान है। इसलिए, दुनिया भर के वैज्ञानिकों ने एक सार्वभौमिक संकेतन प्रणाली विकसित की है, जिसमें लगभग 1500 अवधारणाएं शामिल हैं।

शब्दावली के अलावा, प्रत्येक गतिज भाषा का अपना व्याकरण होता है। उदाहरण के लिए, इसके अमेरिकी संस्करण में, साथ ही रूसी में, चर्चा का विषय वाक्य की शुरुआत में इंगित किया गया है, और फिर इसके बारे में कुछ बताया गया है। यदि मौखिक भाषण में परिभाषा आमतौर पर विषय के सामने होती है, तो सांकेतिक भाषा में यह विपरीत होता है। इनमें से कई भाषाओं की मुख्य विशेषता विशेष रूप से कालानुक्रमिक क्रम में घटनाओं का निर्माण भी है।

परिचय

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है वह अकेला नहीं रह सकता। उसे अन्य व्यक्ति से संबंध स्थापित करने के लिए भाषा प्राप्त है। इस भाषा के मौखिक व्यवहार से व्यक्ति मनोभावों और अनुभूतियों को अभिव्यक्त करता है। वाणी द्वारा वह प्राकृतिक दृश्यों तथ्यों और घटनाओं को प्रकट करता है। इस मौखिक अभिव्यक्ति की सिद्धि वाक् शुद्धता पर निर्भर करती है। वाक कमजोरी के अंतर्गत अस्पष्ट उच्चारण असंगत ध्वनि, हकलाना, तुतलाना तथा ध्वनि उत्पन्न न कर पाना आदि व्यवहार सम्मिलित है। 'बधिर वह है, जिसमें सुनने की शक्ति सामान्य कार्यों के लिए सहायक नहीं होती है या जो अपने व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए सुन नहीं पाता और

दोनों कानों से बहरा है। बधिरता के कारण बालक/बालिका वाक् शक्ति का भी विकास नहीं कर पाता, इसलिए वह मुक बन जाता है। [1,2]

बधिरता दो प्रकार की होती है-

- 1) जन्मजात बधिर, जो वह जन्म से बधिर होने के कारण अपनी बोलने के शक्ति का विकास नहीं कर पाता है
- 2) जिनका विकास सामान्य होता है, जो बोलने और सुनने की क्षमता तो विकसित कर लेते हैं, परंतु किसी बीमारी या दुर्घटना के कारण उनमें श्रवण शक्ति बंद पड़ जाती है।

इनको विशेष प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता नहीं होती है, बल्कि उपचारात्मक उपायों से सुधारा जा सकता है। मूकबधिरता के कारण कुछ तो जन्म से ही बहरे और गूंगे होते हैं कुछ बधिरता का कारण पैतृक पारिवारिक, आर्थिक व सामाजिक भी हो सकता है तथा कुछ बाद में बीमारी के फलस्वरूप मूक और बधिर होते हैं। जैसे- माता को गर्भकाल में कुछ दवाएं देने के परिणामस्वरूप शिशु को बधिर बना सकती है। कुछ, जो अन्य कारक बहरेपन में योगदायी हैं, उनमें गले की बीमारियों चेचक, कुपोषण, तेज ज्वर, मलेरिया, टायफायड, मध्य कर्ण शोध सैप्टिक टॉन्सिलिस, संक्रामक बीमारियाँ, निमोनिया, क्षय रोग, मेनिजाइटिस आदि उल्लेखनीय है। सामाजिक एवं आर्थिक कारणों में संतुलित आहार का अभाव सहन सहन का निम्न स्तर, असंतोषजनक चिकित्सा सुविधाएं और संबंधित ज्ञान का अभाव विशेष स्थान रखते हैं। [3,4] बधिरता अचानक हो सकती है और धीरे-धीरे भी विकसित हो सकती है। बधिर व्यक्ति विभिन्न प्रकार की बाधाओं के शिकार होते हैं। उनकी मूल समस्या संचार का अभाव है। न सुन पाने का एकमात्र परिणाम यह होता है कि क्षमता रखते हुए भी वह बोल नहीं पाता है। वह केवल इशारों से अपने विचार प्रकट करता है और इस प्रकार उसका संवेगात्मक एवं मानसिक विकास शिथिल होता है। [5,6]

पढ़ना श्रवण स्मृति से बहुत निकटता से संबंधित है। अर्थात्, सुनने वाला बच्चा ध्वनि "ए" की ध्वनि जानता है, और जब उसे प्राइमर में दिखाया जाता है कि यह पत्र में कैसे इंगित किया गया है, तो उसके लिए इस संबंध को याद रखना काफी आसान है। बधिर लोगों को बोले गए भाषण की आवाज़ के साथ ग्राफिक छवियों की तुलना करना मुश्किल लगता है। [7,8] कठिनाई इस तथ्य में भी निहित है कि सांकेतिक भाषाओं में वाक्यों की पूरी तरह से अलग संरचना होती है, कोई मामले और घोषणाएं नहीं होती हैं। लेकिन ऐसी कठिनाइयों के बावजूद, अधिकांश श्रवण-बाधित अभी भी मास्टर हैं और अपने विचार लिखित रूप में व्यक्त कर सकते हैं। बहुत से लोग गलती से मानते हैं कि बधिर लोग अपने ज्ञान के अधिग्रहण में बहुत सीमित हैं। लेकिन वास्तव में वे आदिम नहीं हैं, बल्कि बहुत समृद्ध हैं। उनकी मदद से आप किसी भी जटिलता का अंदाजा लगा सकते हैं। [9,10] इसलिए, सांकेतिक भाषा में संचार करने वाले लोग ज्ञान की सभी शाखाओं में महारत हासिल कर सकते हैं, बिना किसी समस्या के उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। बहरे और गूंगे लोग कैसे संवाद करते हैं, यह देखते हुए, हम देखते हैं कि श्रवण हानि उन्हें दोस्त बनाने, परिवार बनाने, बच्चों की परवरिश, एक शब्द में, एक सामान्य जीवन जीने से नहीं रोकती है।

वे उनमें उतने ही निहित हैं जितने अन्य लोगों में। जब उन्हें दोषपूर्ण या अक्षम माना जाता है तो उन्हें गहरा दुख होता है। [11,12]

बहरे और गूंगे लोगों के साथ संवाद कैसे करें? विचारों के पूर्ण आदान-प्रदान के लिए, आपको उनकी मूल भाषा - सांकेतिक भाषा - या कम से कम डैक्टिल वर्णमाला सीखने की जरूरत है। उनकी सोच को समझने का कोई दूसरा तरीका नहीं है।

बधिरों और उनसे जुड़ी हर चीज के बारे में 13 तथ्य जो आप नहीं जानते थे और जिनके बारे में आपने कभी सोचा भी नहीं था। [13,14]

सबसे पहले मैं यह कहना चाहता हूँ कि बधिर लोग बिल्कुल वही लोग होते हैं जो बाकी सभी लोग होते हैं। मुझे एक स्पष्ट उदाहरण के साथ समझाएं। हम स्पेनियों या कनाडाई लोगों के साथ भेदभाव नहीं करते क्योंकि वे रूसी नहीं हैं और दूसरे देश में पैदा हुए थे। तो यह बहरे के साथ है। वे अपनी भाषा और परंपराओं के साथ एक अलग राष्ट्र का गठन करते प्रतीत होते हैं। इसके अलावा, वे हमारे आस-पास की दुनिया को हमसे अलग समझते हैं, लेकिन वे कल्पना नहीं कर सकते कि यह कैसे सुनना संभव है, और यह क्या है। कुछ इस तरह की हम कल्पना नहीं कर सकते, उदाहरण के लिए, चौथा आयाम, तीन में रहना। उन्हें सुनने की दुर्बलता है, लेकिन अन्य इंद्रियां अत्यधिक बढ़ जाती हैं, और इतनी अधिक कि हम उनसे केवल ईर्ष्या कर सकते हैं। इसके बावजूद, हम सभी जैविक और मनोवैज्ञानिक दोनों ही दृष्टि से समान रूप से मानव हैं, और बधिरों के साथ समान व्यवहार किया जाना चाहिए। [15]

1. 30 दिसंबर, 2012 को, रूसी संघ के राष्ट्रपति ने संघीय कानून "संघीय कानून के अनुच्छेद 14 और 19 में संशोधन" विकलांग व्यक्तियों के सामाजिक संरक्षण पर "पर हस्ताक्षर किए, जिसके अनुसार रूसी सांकेतिक भाषा की स्थिति "पारस्परिक संचार के साधन" से "संचार की भाषा" में महत्वपूर्ण रूप से बदल गया है, इसके अध्ययन और विकास के अवसर थे। दरअसल, आधुनिक विज्ञान की दृष्टि से, बधिरों की सांकेतिक भाषाएँ पूर्ण विकसित प्राकृतिक भाषाएँ हैं।
2. बहरे और गूंगे लोग मौजूद नहीं हैं। सभी बधिर लोग भाषण ध्वनियां बना सकते हैं, वे इसे स्वयं करना नहीं सीख सकते - वे भाषण का "नमूना" नहीं सुनते हैं। उसी तरह, मोगली के बच्चे जिन्होंने मानव भाषण नहीं सुना है, वे भी अपने दम पर बोलना नहीं सीख सकते हैं। दूसरी ओर, बधिर लोगों की अपनी सांकेतिक भाषा होती है, और वे सक्रिय रूप से संचार के लिए इसका उपयोग करते हैं।[16,17]
3. बधिर लोग हमें "सुनने" नहीं बल्कि "बोलने" कहते हैं, क्योंकि उनके दृष्टिकोण से हम उनसे केवल इस तथ्य से भिन्न होते हैं कि किसी कारण से संवाद करते समय हम अपने होंठ हिलाते हैं।
4. सभी बधिर लोगों के लिए स्पर्श संवेदनाएं बहुत महत्वपूर्ण होती हैं, और उनके प्रति उनकी संवेदनशीलता बढ़ जाती है। सुनने की अनुपस्थिति में, वे कंपनी को अधिक तेज महसूस करते हैं और तुरंत उन पर प्रतिक्रिया करते हैं। इसके अलावा, बधिरों में बहुत विकसित प्रकाश संवेदनशीलता होती है, इसलिए अंधेरे में वे प्रकाश की थोड़ी सी भी चमक को नोटिस करते हैं। इस प्रकार, प्रकृति सुनने की कमी की भरपाई करती है और ऐसे लोगों को दुनिया में अनुकूलन करने में मदद करती है।
5. बहरापन सिर्फ एक सामान्य परिभाषा है। वास्तव में, श्रवण हानि के 3 डिग्री और बहरेपन के 4 समूह हैं। श्रवण हानि की डिग्री कथित डेसिबल (80 डीबी से नीचे) की संख्या में भिन्न होती है। न्यूमैन प्रणाली के अनुसार, बहरापन तब शुरू होता है जब कोई व्यक्ति 90 डीबी से नीचे की आवाज नहीं सुनता है, और उसके समूह कथित आवृत्तियों (हर्ट्ज में) की सीमा में भिन्न होते हैं। बहरेपन के समूह। वाले लोग 125 से 250 हर्ट्ज तक का अनुभव करते हैं, जो कि गैर-भाषण ध्वनियों का हिस्सा है: जोर से पेट भरना, कारों का शोर आदि। केवल 3% बधिर लोग कुछ भी नहीं सुनते हैं, और अक्सर यह एरिकल और / या आंतरिक कान की संरचना में एक विसंगति के कारण होता है।
6. रोजमर्रा की जिंदगी में, विभिन्न उपकरणों द्वारा बधिरों की मदद की जाती है। उदाहरण के लिए, जब आप दरवाजे की घंटी दबाते हैं, तो पूरे अपार्टमेंट में रोशनी झपकने लगती है। और एक छोटे बच्चे की देखभाल के लिए, वाइब्रेटिंग रेडियो नानी का उपयोग किया जाता है, यह सूचित करते हुए कि बच्चा रो रहा है।[18,19]
7. बधिर लोगों के साथ काम करने वाले तीन प्रकार के अनुवादक हैं। Dactyls - एक विशेष संकेत वर्णमाला - "dactyl" का उपयोग करके अक्षरों में शब्द दिखाएं। RSL (रूसी सांकेतिक भाषा) अनुवादक पूर्ण विकसित अनुवादक हैं जो इशारों का उपयोग करके रूसी से RSL (और इसके विपरीत) में अनुवाद करते हैं। गणना अनुवादक - रूसी से आरएसएल में त्वरित शाब्दिक अनुवाद में विशेषज्ञता वाले अनुवादक, व्याकरण और सांकेतिक भाषा की विशेषताओं की अनदेखी करते हैं; इसे KZhr - ट्रेसिंग साइन स्पीच कहा जाता है। इसके अलावा, "संकेत भाषा दुभाषिया" का पेशा हुआ करता था, जो एक अनुवादक और एक सामाजिक कार्यकर्ता को जोड़ता है। अब यह पेशा व्यवसायों और पदों के रजिस्टर से गायब हो गया है, जिसे "रूसी सांकेतिक भाषा के अनुवादक" द्वारा बदल दिया गया है और इसमें एक सामाजिक कार्यकर्ता के कार्य शामिल नहीं हैं।
8. किसी भी अन्य भाषा की तरह RSL के अपने नियम हैं। इसके अलावा, आरएसएल व्याकरण रूसी की तुलना में अंग्रेजी के समान है।
9. बधिरों को पढ़ाने के दो तरीके हैं: मिमिक्री (मिमिक-जेस्चरल) और शुद्ध मौखिक विधि (इशारों के उपयोग के बिना)।
10. अशर सिंड्रोम नाम की बीमारी होती है। यह एक वंशानुगत विकार है जो श्रवण हानि और प्रगतिशील दृष्टि हानि की विशेषता है। यही है, एक बधिर व्यक्ति धीरे-धीरे क्षैतिज और लंबवत रूप से देखने के कोण को संकुचित करता है (बधिर लोगों में यह शुरू में स्वस्थ लोगों की तुलना में बहुत व्यापक होता है) और लगभग 40 वर्ष की आयु तक वह लगभग दृष्टि खो देता है। इस बीमारी का निदान प्रारंभिक अवस्था में किया जाता है, लेकिन दुर्भाग्य से इसका इलाज नहीं किया जाता है। ऐसे मामलों में, इस निदान वाले लोगों को पहले से टिफ्लोसुई अनुवाद सिखाया जाता है। ऐसा भाषण हावभाव भी होता है, लेकिन इसकी कोई गुंजाइश नहीं होती है, और सभी इशारों को एक हाथ से दिखाया जाता है, जो वार्ताकार के हाथ से ढका होता है।[20,21]

11. बहुत से स्वस्थ लोग मानते हैं कि बधिर लोग गरीब हैं, विकलांग लोग दुखी हैं। लेकिन वे खुद ऐसा नहीं सोचते। वे पूर्ण संभव जीवन जीते हैं, अध्ययन करते हैं, व्यवसाय करते हैं, कार चलाते हैं (एक विशेष संकेत "पहिया के पीछे बहरा चालक" है), परिवार हैं, बच्चों की परवरिश करते हैं ... युवा अक्सर डिस्को भी जाते हैं। वे संगीत नहीं सुनते (या मुश्किल से सुनते हैं), लेकिन वे बीट्स के कंपन को महसूस करते हैं, जो सभी पार्टी जाने वालों की एक तरह की समाधि में प्रवेश करते हैं।

12. बधिर लोगों की अपनी विशेष संस्कृति और मनोविज्ञान होता है। उदाहरण के लिए, वे सीधे सच बोलते हैं, बिना चापलूसी के और सीधे जवाब देने से बचते हैं, सुनने वालों के विपरीत। यह पूरी तरह से स्वाभाविक माना जाता है, और वे ईमानदारी से यह नहीं समझते हैं कि जब वक्ता ईमानदार शब्दों पर अपराध करते हैं, जैसे "आप मोटे हैं" या "यह केश आपको शोभा नहीं देता।"

13. यहां साइन थिएटर और यहां तक कि साइन सिंगिंग भी है।[22,23]

विचार-विमर्श

मूक बधिर विद्यार्थियों के लिए अच्छी खबर है, हरियाणा में अब पहली बार बारहवीं कक्षा के बाद मूक व बधिर विद्यार्थी कॉलेज में शिक्षा ग्रहण कर सकेंगे। जिसके लिए उच्चतर शिक्षा विभाग ने पत्र जारी कर करनाल के पंडित चिरंजीलाल शर्मा राजकीय महाविद्यालय में मूक व बधिर विद्यार्थियों के लिए बीए प्रथम की कक्षाएं इसी सत्र में शुरू करने के आदेश जारी कर दिए हैं। मूक व बधिर विद्यार्थी इसी सत्र से सामान्य बच्चों के साथ पढ़ेंगे, जिसके लिए उच्चतर शिक्षा विभाग बधिर शिक्षा के लिए अलग से अध्यापक की सुविधा करेगा। जो उसी कक्षा में सांकेतिक शिक्षा से मूक व बधिर विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करेंगे। इसी सत्र से शुरू होने वाली बीए की कक्षा के लिए मूक व बधिर विद्यार्थियों को कॉलेज में एडमिशन के लिए ऑफलाइन आवेदन करेंगे। बीए कक्षा में दाखिला लेने के लिए बधिर विद्यार्थियों का आवेदन निःशुल्क रहेगा। इसके साथ ही बीए शिक्षा के लिए कोई संख्या निर्धारित नहीं की गई है। मूक व बधिर विद्यार्थियों को अब शिक्षा के लिए इधर उधर भटकना नहीं पड़ेगा वे आसानी से कॉलेज में सामान्य बच्चों के साथ शिक्षा ग्रहण कर सकेंगे। हरियाणा में केवल 12वीं कक्षा तक मूक व बधिर विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर पाते हैं। इसके बाद वे अपनी शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाते, क्योंकि मूक बधिर विद्यार्थियों के लिए कॉलेजों में कोई सुविधा नहीं है। इसके लिए सरकार की ओर से बढ़ा कदम उठाया गया है। मूक व बधिर कक्षा शुरू करने का केवल एक उद्देश्य है जिससे सामान्य बच्चों के कॉलेज में शिक्षा ग्रहण कर एक दूसरे को अच्छी तरह समझ सकें। मूक व बधिर, सामान्य बच्चों के बीच कोई दूरी न हो।[24,25]

बधिर शिक्षा (Deaf education) से अभिप्राय उन विद्यार्थियों की शिक्षा से है जो भिन्न-भिन्न स्तर की बधिरता से प्रभावित हैं।

बधिर बालक दो प्रकार के होते हैं। प्रथम श्रेणी में उनको रखा जा सकता है जो नितांत बधिर होते हैं। इनमें तनिक भी श्रवणशक्ति नहीं होती इसलिए शब्दों को न सुनने के कारण वे उच्चारण भी नहीं कर पाते क्योंकि भाषा का सीखना अनुकरण पर अधिक निर्भर होता है। दूसरे प्रकार के बधिर वे होते हैं जिनकी श्रवणशक्ति इतनी कमजोर होती है कि वे साधारण बातचीत नहीं सुन सकते किंतु श्रवणयंत्र की सहायता से सुन सकते हैं।

अर्जित बधिरता के कुछ सामान्य कारण होते हैं। इसको समझने के लिए कानों की बनावट के विषय में जानना आवश्यक है सामान्य रूप से कानों के तीन भाग होते हैं : १. बाह्यकर्ण २. मध्यकर्ण तथा ३. आंतरिक कर्ण। बाह्यकर्ण के कारण केवल एक प्रतिशत बधिर होते हैं जो खाज, फोड़े फुंसी या जलने के कारण केवल प्रभावित होता है। मध्यकर्ण की खराबी से उत्पन्न हुई बधिरता के मुख्य कारण हैं, कान बहना, स्कारलेट फीवर (लाल बुखार), चेचक, निमोनिया इत्यादि। मध्यकर्ण के कारण ४५ प्रतिशत बधिरता होती है। इन सबके अतिरिक्त कान के स्नायुतंतुओं की खराबी के कारण भी बधिरता होती है। इन स्नायुतंतुओं का हानि पहुँचानेवाले कारण गर्दनतोड़ बुखार, मियादी ज्वर होते हैं। कभी कभी चोट लगने से भी बहरापन हो जाता है। 1st March 2019 इंडियन साइन लेंग्वेज डिक्शनरी में दूसरे संस्करण में 6000 शब्द सम्मिलित किया गया ।

इस समय संसार में बधिरों की शिक्षा के लिए अनेक प्रणालियाँ हैं। सर्वोत्तम प्रणाली कौन सी है, इस विषय पर लोगों में मतभेद है। 'अमेरिकन ऐनलज़ ऑव द डेफ़' के अनुसार शिक्षा की विभिन्न प्रणालियाँ निम्नलिखित हैं :

- मौखिक प्रणाली (ओरल मेथड)- बोलकर समझाना तथा लिखना शिक्षा के मुख्य उद्देश्य हैं। पाठ्यक्रम के प्रारंभिक भाग में सर्वत्र बधिरों के प्रायः प्रत्येक स्कूल में प्राकृतिक संकेतों का प्रयोग करने दिया जाता है।
- हस्त प्रणाली (मैनुअल मेथड)- संकेत हस्त, वर्णमाला तथा लिखना इन तीनों का प्रयोग शिक्षा देने के लिए किया जाता है। मुख्य उद्देश्य मानसिक विकास में तथा लिखित भाषा के प्रयोग एवं अर्थ समझने में सहायता पहुँचाना है।

- हस्त वर्णमाला प्रणाली (मैनुअल अल्फ़ाबेट मेथड)- हस्त वर्णमाला तथा लिखना प्रधान साधन है जिनका प्रयोग विद्यार्थियों को शिक्षा देने में किया जाता है। बोलना तथा बोलकर समझना ये दोनों बातें सभी बधिर बच्चों को, जहाँ यह प्रणाली प्रचलित है, सिखाई जाती हैं।
- श्रवण प्रणाली (ओरीकुलर मेथड)- अर्द्ध बधिर विद्यार्थियों की श्रवण शक्ति का प्रयोग यथासंभव अधिकाधिक किया जाता है। उनको मुख्यतया वाणी, श्रवण शक्ति तथा लिखने की सहायता से शिक्षा दी जाती है।
- मिश्रित प्रणाली (कंबाइंड सिस्टम)- बोलना और बोलकर समझना बहुत महत्वपूर्ण समझा जाता है। किंतु मानसिक विकास तथा भाषा की प्रवृत्ति को और भी महत्वपूर्ण समझा जाता है। विश्वास है कि कुछ अवस्थाओं में इन दोनों चीजों को हस्त तथा हस्त वर्णमाला प्रणाली द्वारा सर्वोत्तम रूप में अग्रसर किया जा सकता है।

जहाँ तक परिस्थितियाँ सहायक होती हैं, प्रत्येक विद्यार्थी के लिए उसकी व्यक्तिगत प्रवृत्ति के अनुसार ही प्रणाली चुनी जाती है।

सार्वजनिक जीवन में उचित स्थान ग्रहण करने के लिए बधिरों के लिए यह आवश्यक है कि अपनी वाणी का विकास करें, भाषा सीखें और होठों की हरकत समझें। अतः इन तीनों गुणों का विकास करने का अवसर प्रत्येक बधिर बच्चे को देना चाहिए।

यदि मौखिक प्रणाली तथा सुनने में सहायक यंत्रों के द्वारा विद्यार्थी उन्नति कर सकें तो उनकी शिक्षा के लिए संकेतों तथा हस्त प्रणाली का प्रयोग नहीं करना चाहिए। किंतु यदि विद्यार्थी की उससे कुछ उन्नति होती न दिखाई पड़े तो उसे अच्छा नागरिक बनाने के लिए संकेतों तथा हस्त वर्णमाला का उपयोग करना चाहिए। [26,27]

पूर्ण एवं आंशिक मूक बधिर बालक बालिकाओं की शैक्षिक पुनर्वास समस्यायें

	N	M	SD	M1=M2	SED	t-value	परिणाम
पूर्ण	101	5.61	1.75				
आंशिक	46	5.59	1.67	0.02	0.30	0.06	1.98

परिणाम

नेत्रहीन और मूक-बधिर छात्रों को पढ़ाने के लिए शिक्षक सीखेंगे ब्रेल लिपि बिलासपुर। आम स्कूलों के नेत्रहीन और मूक-बधिर छात्रों को पढ़ाने के लिए सामान्य शिक्षकों को ब्रेल लिपि और सांकेतिक भाषा सिखाई जाएगी। मूक-बधिर बच्चों को पढ़ाने के लिए ब्लाक संसाधन केंद्र एरवाकटरा में टीचरों को प्रशिक्षित किया गया। इसमें टीचरों को ऐसे बच्चों को शिक्षित करने के लिए ब्रेल लिपि, फोल्डिंग छड़ी के प्रयोग करने के तरीके के बारे में जानकारी दी गई। इसे सुनेंरोकेंकाली खांसी, निमोनिया तेज दिमागी बुखार शिशु अवस्था में आक्सीजन की कमी इत्यादि कारणों से बच्चा गूंगा बहरा या हकलाना तुतलाना आदि रोग से ग्रसित हो जाते हैं। इसे सुनेंरोकेंकाली विकृतियों की वजह सुनने और बोलने वाली नस की क्षमता में कमी होना होता है। तीन साल के ऐसे बच्चों की पहले जिला अस्पताल के ईएनटी सर्जन जांच करेंगे। कॉकलियर इंप्लांट की जरूरत होने पर सर्जन सीएमओ कार्यालय को बताएंगे। यहां से प्रस्ताव संस्थान को भेजा जाएगा।

जन्म से बधिर और सुनने में कठिन संचार कौशल वाले बच्चों को पढ़ाने की प्रक्रिया कई बातों पर निर्भर करती है:

- सुनवाई हानि की डिग्री,
- क्या माता-पिता सुनते हैं (अर्थात, भाषण का वातावरण जिसमें बच्चे का पालन-पोषण होता है),
- बच्चा किस शैक्षणिक संस्थान में जा रहा है - बधिरों के लिए एक विशेष स्कूल और सुनने में कठिन या सामूहिक (समावेशी) स्कूल,
- शिक्षकों की क्षमता का स्तर,
- बच्चे के विकास के लिए विशेष परिस्थितियाँ बनाने में माता-पिता कितना निवेश करते हैं,
- क्या कोई अतिरिक्त विशेषताएं हैं।
- इसलिए, बधिर और कम सुनने वाले बच्चों में उच्चारण और श्रवण धारणा के विकास के तरीके अलग-अलग हैं।

बधिर या कम सुनने वाले माता-पिता के परिवार में बधिर बच्चे सांकेतिक भाषा में संवाद करते हैं और उसी तरह संचार कौशल सीखते हैं जैसे सुनने वाले माता-पिता के परिवार में बच्चों को सुनना। यहां बिल्कुल कोई अंतर नहीं है, सिवाय इसके कि संचार के दौरान बधिर बच्चे अपने सुनने और बोलने का नहीं, बल्कि अपने हाथों और आंखों का इस्तेमाल करते हैं। बधिर माता-पिता, छोटे

बच्चों की तरह, सांकेतिक भाषा धीरे-धीरे और लाक्षणिक रूप से बोलते हैं, जैसे माता-पिता अपने बच्चों से अधिक धीरे-धीरे बोलते हैं और "कुत्ते" के बजाय "वाह-वाह" कहते हैं। उसी तरह, समाज में व्यवहार के नियम उन्हें कई बार दोहराए जाते हैं जब तक कि बच्चा उन्हें सीख नहीं लेता।[23]

एक और बात बधिर बच्चे का सुनवाई के साथ संचार है। बधिर और कम सुनने वाले बच्चों को विशेष रूप से बोली जाने वाली भाषा में संचार के कौशल सिखाए जाते हैं। उच्चारण का निर्माण और श्रवण धारणा का विकास जन्म से ही उद्देश्यपूर्ण ढंग से जुड़ा हुआ है। अवशिष्ट श्रवण (पूरी दुनिया में पूरी तरह से बहरे लोग इकाइयों हैं) के उपयोग के लिए श्रवण यंत्र पहले से ही 3-4 महीने से चुने जा सकते हैं, बहरे और भाषण चिकित्सक बच्चे के साथ काम करते हैं, उसे ध्वनियों का उच्चारण करना और संबोधित भाषण को नेत्रहीन रूप से समझना सिखाते हैं।

लेकिन यह समझना महत्वपूर्ण है कि श्रवण यंत्र और यहां तक कि कर्णावत प्रत्यारोपण भी बहरे बच्चे या गंभीर श्रवण हानि वाले बच्चे को नहीं बनाते हैं। बधिर या कम सुनने वाले बच्चों के लिए विशेष किंडरगार्टन और स्कूलों में, पूरी शैक्षिक और पालन-पोषण प्रक्रिया को संरचित किया जाता है ताकि बच्चा अंततः स्वतंत्र रूप से सुनवाई के साथ संपर्क कर सके। इसके अलावा, शैक्षणिक संस्थानों में, एक बधिर या सुनने में कठिन बच्चे को पढ़ाना लगभग हमेशा सांकेतिक भाषा के उपयोग के बिना होता है, केवल डैक्टिल (मैन्युअल वर्णमाला) का उपयोग किया जाता है। इस प्रकार, यह पता चला है कि एक बहरे बच्चे को एक भाषा में पढ़ाया जाता है, और पाठ्येतर घंटों में वह दूसरी बात करता है - बच्चा द्विभाषी के रूप में बड़ा होता है, लेकिन एक बहुत ही महत्वपूर्ण बारीकियां हैं। जब एक सुनने वाले बच्चे को एक नई भाषा सिखाई जाती है, तो शब्दों के नियम और अर्थ उसे उसी की भाषा में समझाया जाता है। बहरे बच्चे के मामले में ऐसा नहीं होता है। इसलिए रूसी भाषा में निरक्षरता, शब्दों के अर्थ की गलतफहमी या गलतफहमी जैसे परिणाम सामने आते हैं। जन्म से एक बहरे बच्चा या एक बच्चा जिसने 3 साल की उम्र से पहले अपनी सुनवाई खो दी है, वह कभी भी स्वतंत्र रूप से सुनने वाले लोगों के साथ संवाद करना नहीं सीख पाएगा। उनके जन्म से ही श्रोताओं के साथ संवाद करने में सक्षम होने के लिए, विशेष परिस्थितियों का निर्माण करना आवश्यक है। सबसे पहले, यह एक समृद्ध भाषण वातावरण है, अर्थात् बच्चे को अपने आस-पास के लोगों को बात करते हुए देखना चाहिए। बहरे या कम सुनने वाले बच्चे के साथ खेलते समय, वयस्क को यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता होती है कि बच्चा उसके साथ खेलता है, न कि केवल खाली घूरता है। ऐसे में बच्चे को वक्ता के सामने देखने की आदत हो जाती है, यह समझने की कोशिश करता है कि वे उससे क्या कह रहे हैं, स्थिति के अनुसार, वयस्क की मनोदशा और कार्यों के अनुसार। बच्चे को अपनी आवाज का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया जाता है, ताकि उसे बोलना पड़े, भले ही उसे बिना शब्दों के समझा जाए। विशेष खेलों और ध्वन्यात्मक ताल कक्षाओं की प्रक्रिया में, बच्चे को एक वयस्क की आवाज़ की नकल करना सिखाया जाता है।[24]

बधिर-मूर्खता को बचपन में जन्मजात श्रवण हानि या श्रवण हानि के रूप में समझा जाना चाहिए। बहरे और गूंगे लोगों में, गूंगा भाषण के अंगों में दोष का परिणाम नहीं है, बल्कि सुनने की कमी का परिणाम है।

शायद ही कभी ऐसे बच्चे होते हैं जिनमें केंद्रीय तंत्रिका तंत्र का दोषपूर्ण विकास सुनने और बोलने की कमी का कारण होता है।

बहरेपन और उसके बाद के गूंगेपन का कारण अक्सर भ्रूण काल में या अंतर्गर्भाशयी जीवन की बाद की अवधि में, या संक्रामक रोगों (सेरेब्रोस्पाइनल मेनिन्जाइटिस) के कारण जन्म के बाद ध्वनि-बोधक तंत्र का अविकसित होना होता है। (, , ,) इस प्रकार, सशर्त रूप से जन्मजात और अधिग्रहित बहरे-मूर्खता के बीच अंतर करें।

अधिकांश लेखकों के आंकड़ों के अनुसार, जन्मजात पर अधिग्रहित बहरे-मूर्खता की प्रबलता को स्थापित माना जा सकता है। जन्मजात बहरे-गूंगापन, रहने की स्थिति और नशा (शराब, उपदंश, आदि) के एटियलजि में एक भूमिका निभाते हैं।

बच्चे के जन्म के दौरान चोटें, एक संकीर्ण श्रोणि के साथ सिर का संपीड़न, पैथोलॉजिकल प्रसव के साथ, संदंश का उपयोग केंद्रीय तंत्रिका तंत्र और कान को प्रभावित कर सकता है।

मूक बधिरता का विकास कई संक्रामक रोगों से प्रभावित होता है, जिनमें सेरेब्रोस्पाइनल मेनिन्जाइटिस महामारी पहले स्थान पर है। इस रोग में ध्वनि ग्रहण करने वाला यंत्र प्रभावित होता है (, ,), और मस्तिष्कमेरु मेनिन्जाइटिस के साथ ओटिटिस मीडिया मेनिन्जाइटिस का कारण नहीं है, बल्कि एक सहवर्ती रोग है। अगला स्थान खसरा जैसे संक्रमणों का है, , कण्ठमाला और स्कार्लेट ज्वर, जिसमें घाव ध्वनि-संचालन और ध्वनि-बोधक तंत्र दोनों के विभिन्न भागों में स्थानीयकृत होते हैं। अधिग्रहित बहरेपन के साथ, भाषण के अवशेष कभी-कभी अलग-अलग शब्दों के रूप में संरक्षित होते हैं; जन्मजात बहरेपन के साथ, यह पूरी तरह से बाहर रखा गया है।[25]

ध्वनि-बोधक तंत्र में पैथोहिस्टोलॉजिकल परिवर्तन गैर-मांसल तंत्रिका तंतुओं के विनाश के साथ कोशिकाओं के स्पष्ट क्षय की विशेषता है।

मूक बधिर का निदान जितनी जल्दी हो सके होना चाहिए, क्योंकि उचित कलात्मक प्रशिक्षण (हॉठ पढ़ने) द्वारा गूंगापन को काफी हद तक समाप्त किया जा सकता है।

एक बच्चे के जन्म के क्षण से उसके विकास को देखते हुए, माता-पिता या देखभाल करने वाले, ध्वनियों के प्रति प्रतिक्रिया की कमी, यानी तथाकथित श्रवण ध्यान की कमी को नोटिस कर सकते हैं। एक सुनने वाला बच्चा ध्वनि पर अपने आंदोलनों को धीमा कर देता है, और इससे "श्रवण ध्यान" का पता चलता है। इसके साथ ही, कोई "वेस्टिबुलर ध्यान" की अनुपस्थिति का निरीक्षण कर सकता है, अर्थात्, बच्चा मोशन सिकनेस के लिए स्थिति में बदलाव का जवाब नहीं देता है। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि बहरे और गूंगे लोगों में वेस्टिबुलर विश्लेषक का कार्य अक्सर कम हो जाता है।

बचपन में गूंगेपन की समस्या को सुलझाना मुश्किल होता है, क्योंकि जो बच्चे जन्म से बहरे होते हैं, जैसे जन्म के समय सुनने वाले, वैसे ही चिल्लाते हैं, उनका एक ही प्रलाप होता है। हालांकि, भविष्य में, श्रवण संवेदनाओं की अनुपस्थिति के कारण, भाषण आवेग गायब हो जाता है, क्योंकि भाषण मस्तिष्क गोलार्द्धों के कॉर्टिकल-सहयोगी कार्यों की श्रेणी से संबंधित है।

एक सामान्य बच्चे में, स्वरयंत्र व्यंजन की उपस्थिति के रूप में मुखर प्रतिक्रियाएं 3-3.5 महीने से शुरू होती हैं। इसके बाद शीघ्र ही उच्चारित ध्वनियाँ आती हैं: प्रयोगशाला और लेबियो-नाक, दंत और दंत-नाक। जैसे-जैसे बच्चा विकसित होता है, उम्र और व्यक्तिगत विशेषताओं के आधार पर, ध्वनियाँ दिखाई देती हैं जो लंबे समय तक उच्चारित होती हैं: फुफकारना, सीटी बजाना। भाषण क्षमता के देर से विकास के मामलों में सुनवाई की उपस्थिति में मुखर प्रतिक्रियाओं की कमी भी हो सकती है।[26]

बहरेपन का निदान बचपन में इतिहास और कान की एक विशेष परीक्षा पर आधारित होना चाहिए। श्रवण और वेस्टिबुलर विश्लेषक का कार्यात्मक अध्ययन एक विशेष प्रकृति का होता है और यह बच्चे के विकास की एक या दूसरी अवधि पर निर्भर करता है। घंटी की आवाज, ट्यूनिंग कांटा, इलेक्ट्रोक्व्यूमेट्रिक डिवाइस से लेकर वातानुकूलित रिफ्लेक्सिस की विधि तक विभिन्न शोध विधियों को लागू करना, बचपन में सुनवाई की उपस्थिति का निर्धारण करना संभव है; अधिक विस्तृत डेटा पहले से ही बड़ी उम्र में प्राप्त किया जा सकता है।

निम्नलिखित लक्षणों में कुछ नैदानिक मूल्य हैं: ऑरो-पैलेसब्रल रिफ्लेक्स - रिफ्लेक्स बिलिंग की उपस्थिति और एक ऑरो-प्यूपिलरी रिफ्लेक्स - श्रवण धारणा की उपस्थिति में विद्यार्थियों का कसना और फैलाव।

बड़ी उम्र में बच्चों की चाल का निरीक्षण नैदानिक मूल्य का हो सकता है: बहरे और गूंगे लोगों में, श्रवण नियंत्रण की कमी के आधार पर, एक फेरबदल देखा जाता है।

बहरे और गूंगे की आवाज और भाषण नीरस और नीरस हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि भाषण सही ढंग से तभी विकसित हो सकता है जब बच्चा सामान्य रूप से सुनता है। अनुपस्थिति या महत्वपूर्ण सुनवाई हानि में, बच्चे को बाहरी उत्तेजनाओं से निकलने वाले ध्वनि संकेत प्राप्त नहीं होते हैं, या उन्हें विकृत रूप में प्राप्त होता है। इससे भाषण में देरी होती है, इसकी एकरसता, एकरसता।

बहरे और गूंगेपन की रोकथाम... गर्भावस्था के दौरान एक निश्चित आहार का अनुपालन महत्वपूर्ण है। चिकित्सीय और रोगनिरोधी सलाह जो गर्भवती महिलाओं को परामर्श में प्राप्त होती है, का उद्देश्य गर्भवती माँ को हानिकारक एटियोलॉजिकल क्षणों से परिचित कराना है। शराब, नशीली दवाओं की लत और यौन संचारित रोगों से लड़ना आवश्यक है, क्योंकि शराब, निकोटीन या अन्य जहरों के साथ शरीर का जहर निस्संदेह एक हानिकारक कारक है जो भ्रूण के सही गठन और विकास को प्रभावित करता है।

अधिग्रहित बहरेपन (बहरापन) की रोकथाम में ऊपरी श्रवण पथ और छोटे और बड़े बच्चों में मध्य कान का पुनर्वास, पर्यावरण में सुधार और संक्रमण के खिलाफ लड़ाई में शामिल होना चाहिए, और इसलिए, कान से उन जटिलताओं के साथ जो बहरेपन का कारण बन सकती हैं।

मूक बधिर बच्चों के इलाज का मुख्य लक्ष्य- उन्हें वक्ता बनाना, उन्हें उचित पालन-पोषण, शिक्षा देना और सुनने के साथ समान आधार पर सामाजिक रूप से उपयोगी जीवन में शामिल करना है। प्रश्न के इस निरूपण के साथ, मिमिक-जेस्क्यूलेटरी पद्धति ने अपना अर्थ खो दिया है, क्योंकि यह अन्य लोगों से बहरे और गूंगे को सीमित करता है: केवल बहरे और गूंगा एक दूसरे के साथ इस तरह से संवाद कर सकते हैं। इससे पहले, मूक-बधिर बच्चों की अनिवार्य शिक्षा शुरू की गई थी ताकि वे एक विशेष स्कूल में प्रवेश करके पहले से ही कुछ प्रशिक्षण प्राप्त कर सकें। मूक बधिर को सुनने वाले और इसके विपरीत समझने के लिए, अतीत में पूरे

शब्दों के उच्चारण की कलात्मक पद्धति का परिचय दिया गया था, आदि। अतीत में, विशेष विद्यालयों में शिक्षण की विश्लेषणात्मक-सिंथेटिक पद्धति को अपनाया गया था।

एक शिक्षण पद्धति का चयन करने के लिए, किसी को पूर्ण बहरेपन के साथ बहरे और गूंगे के बीच अंतर करना चाहिए और श्रवण अवशेषों के साथ बहरे और गूंगे के बीच अंतर करना चाहिए। लिप रीडिंग के कई प्रकार ज्ञात हैं। उदाहरण के लिए, कुछ लेखक एक विश्लेषणात्मक शिक्षण पद्धति की सलाह देते हैं, जिसमें सीखना व्यक्तिगत ध्वनियों, शब्दांशों, फिर शब्दों के उच्चारण से शुरू होता है; अन्य एक सिंथेटिक विधि का सुझाव देते हैं - पूरे शब्दों के उच्चारण की एक विधि, आदि।

यदि हम इस बात को ध्यान में रखते हैं कि केवल 4-5% बहरे और गूंगा ने अपनी सुनवाई पूरी तरह से खो दी है, और 95% ने इसके कुछ अवशेषों को संरक्षित किया है, तो संगीत वाद्ययंत्र और रेडियो उपकरणों के साथ सुनने के इन अवशेषों का व्यवस्थित रूप से अभ्यास करने की सलाह दी जाती है। एक अर्थ में एक भूलभुलैया समारोह की उपस्थिति को सुनवाई को सक्रिय करने के लिए व्यावहारिक रूप से एक अनुकूल संकेत माना जा सकता है और इसके विपरीत।[27]

मूक-बधिर की मौखिक वाणी की सहायता से तथा साथ ही ध्वनि उद्दीपनों की सहायता से मूक-बधिर की आवाज को एक उज्वल रंग देकर एक सामान्य बच्चे की आवाज के करीब लाता है।

एक प्रकार का बहरा-मूर्खता श्रवण-मूर्खता है: बच्चा एक ध्वनि सुनता है, लेकिन शब्दों को नहीं समझता है। वह प्रसिद्ध शब्दों को उनके अर्थ को समझे बिना दोहराता है - यह एक "मूक" है। उसका श्रवण अंग सामान्य है, लेकिन मस्तिष्क प्रांतस्था के कुछ हिस्सों में सुनने और बोलने से संबंधित घाव हैं। इस प्रकार, श्रवण-मूर्खता बहरेपन के बिना गूंगा है। श्रवण-मूर्खता के रूप भिन्न हैं: 1) मोटर (बच्चा उससे पूछे गए प्रश्न को समझता है, लेकिन नकल के संकेतों के साथ उत्तर देता है, शब्दों से नहीं); 2) संवेदी (बच्चा भाषण सुनता है, लेकिन शब्दों का अर्थ नहीं समझता); 3) मोटर-संवेदी (दो संकेतित रूपों का संयोजन)।

मानव समुदाय में बधिर लोग असामान्य नहीं हैं। आंकड़ों के मुताबिक, दुनिया की 0.4 फीसदी आबादी इस तरह के दोष से ग्रस्त है। बहुत कम आम केवल गूंगे लोग होते हैं जो भाषण सुनते और समझते हैं, लेकिन जवाब देने में असमर्थ होते हैं। और यह घटना सुनने की क्षमता और बोलने की क्षमता दोनों की कमी से कहीं अधिक दिलचस्प है।

चिकित्सकीय दृष्टि से गूंगा लोगों में दिलचस्पी लेना गलत है। सीधे शब्दों में कहें तो सभी बच्चे मूक होते हैं - वे बात नहीं कर सकते। और आवाजें लगभग हर जीवित नवजात शिशु द्वारा बनाई जाती हैं। भाषण एक माध्यमिक कौशल है जो सुनने के माध्यम से प्राप्त जानकारी के परिणामस्वरूप विकसित होता है। और अगर कोई बच्चा बहरा पैदा होता है, तो उसकी अनुपस्थिति के परिणामस्वरूप, समय के साथ, वह पूरी तरह से स्तब्ध हो जाता है, अर्थात् वह व्यर्थ की आवाजें भी करना बंद कर देता है। इस प्रकार, गूंगे लोग ऐसे पैदा नहीं होते हैं, बल्कि बन जाते हैं। लेकिन बहरापन जन्मजात हो सकता है। इसके अलावा, भले ही इसे ठीक नहीं किया जा सकता है, और श्रवण यंत्र बहरेपन की भरपाई करने में सक्षम नहीं है, फिर भी एक व्यक्ति को बोलना सिखाया जा सकता है - विशेष तकनीकें हैं।[20,21]

निष्कर्ष

हम पहले ही इस निष्कर्ष पर पहुंच चुके हैं कि मौन हमेशा अर्जित किया जाता है। इसके अलावा, यह किसी भी उम्र में किसी व्यक्ति से आगे निकल सकता है। और विभिन्न कारक इसका कारण बन सकते हैं। गूंगे लोग निम्नलिखित परिस्थितियों में बोलने की क्षमता खो देते हैं।

1. मस्तिष्क क्षति। यह दर्दनाक या शारीरिक हो सकता है। अधिकतर, गूंगापन एक निश्चित क्षेत्र में सिर पर चोट लगने, ब्रेन कैसर या उसमें रक्तस्राव के कारण होता है। ऑटिज्म के मरीज अक्सर अवाक होते हैं, इस तथ्य के बावजूद कि हर कोई सुन सकता है।
2. भाषण के लिए जिम्मेदार अंगों में दोष। ये किसी प्रकार की बीमारी के कारण लिगामेंट की चोट या विकृति हो सकती है। जीभ के पक्षाघात का एक वास्तविक रूप सिल्वेस्टर स्टेलोन को याद करने के लिए पर्याप्त है, जिनकी जीभ आंशिक रूप से लकवाग्रस्त है, लेकिन उनका भाषण तब तक बहुत अस्पष्ट था जब तक कि अभिनेता ने इसे गहन रूप से विकसित करना शुरू नहीं किया। यह शायद इस अंग के अभाव का उल्लेख करने योग्य नहीं है - इस तरह के परिणाम की संभावना बहुत कम है।
3. गूंगापन। एक मनोदैहिक विकार जिसके कारण व्यक्ति बोलना बंद कर देता है। यह गंभीर तनावपूर्ण स्थितियों या हिलने-डुलने के कारण होता है। वहीं, गूंगे लोग उन्हें संबोधित भाषण को समझते हैं और उस पर प्रतिक्रिया करते हैं, लेकिन वे खुद चुप्पी को दूर करने में सक्षम नहीं होते हैं। साथ ही, मौन चयनात्मक हो सकता है - उदाहरण के लिए, केवल पुरुषों को छूने के लिए, जबकि एक व्यक्ति महिलाओं के साथ खुलकर बात करता है। इसका इलाज डिसइन्हिबिशन तकनीक से किया जाता है।

यदि बोलने की क्षमता पूरी तरह से खो गई है और इसे बहाल नहीं किया जा सकता है, तो व्यक्ति को पत्र और गूंगा की भाषा से संचार में मदद मिल सकती है। सच है, बाद वाले को केवल विशेष रूप से प्रशिक्षित लोग ही समझ सकते हैं।[22]

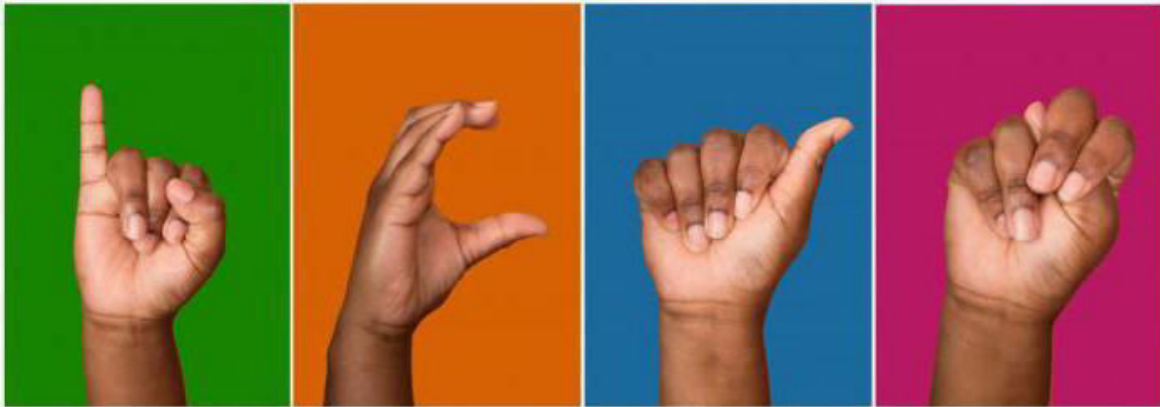
गूंगे की भाषा बिल्कुल वैसी नहीं होती है, जैसी कि लोग विदेशियों से समझाने की कोशिश करते हैं। इस मामले में, यह खराब और संकीर्ण रूप से कार्यात्मक है, जबकि बोलने की क्षमता से वंचित लोगों को एक समृद्ध शब्दावली की आवश्यकता होती है जो कलात्मक छवियों और गणितीय शब्दों दोनों को व्यक्त कर सके। हम में से अधिकांश लोगों ने कान से भाषा में महारत हासिल कर ली है और भाषण के माध्यम से अपने विचारों को संप्रेषित करते हैं। हम अपने मन में शब्दों और वाक्यांशों को पुनः उत्पन्न करते हैं और उनका उच्चारण करते हैं, इस प्रकार हम जो कहना चाहते हैं उसे व्यक्त करते हैं। लेकिन बहरे और गूंगे लोग कैसे संवाद करते हैं? संवाद करने की मानवीय इच्छा बहुत मजबूत है और किसी भी बाधा को दूर करने में सक्षम है। जो लोग बधिर होते हैं, उनमें भाषा सीखने का कार्य आमतौर पर दृष्टि से होता है। जीवन ने ऐसे लोगों को एक साथ लाया, और उन्होंने स्वयं संचार का एक विशेष तरीका विकसित किया, जिसे संकेत (गतिज) भाषा के रूप में जाना जाता है। समय के साथ, इसने नई शब्दावली हासिल की और एक संपूर्ण भाषाई प्रणाली का प्रतिनिधित्व किया। बेशक, हम में से कई लोगों ने कम से कम एक बार बहरे और गूंगे संचार को देखा है।

पहले, कई स्कूलों में बधिर लोगों को इशारों का उपयोग करने की मनाही थी, जबकि उन्हें होंठ पढ़ने और लिखित रूप में अपने विचार व्यक्त करने के लिए मजबूर किया जाता था। लेकिन उनमें से जिन्होंने पहले गतिज भाषण में महारत हासिल की, उन्होंने अपनी पढ़ाई को अधिक आसानी से और जल्दी से पढ़ना और लिखना सीख लिया।

और वे किस भाषा में सोचते हैं अपनी मातृभाषा में - सांकेतिक भाषा में। सुनकर लोग अपने विचारों को उसी भाषा में अपने दिमाग में बनाते हैं जिसमें वे संवाद करते हैं। बधिरों के साथ भी ऐसा ही है।

बहुत से लोग गलती से सोचते हैं कि बहरे बोल नहीं सकते। लेकिन एक नियम के रूप में, उनका ध्वनि तंत्र क्षतिग्रस्त नहीं है, यह बस डिज़ाइन नहीं किया गया है।

बाहर से, ऐसा लगता है कि यह एक बेहतर पैटोमाइम है, क्योंकि चेहरे के भाव, शरीर की गतिविधियों और आसपास के स्थान का भी सक्रिय रूप से उपयोग किया जाता है।[23,24]



इसे चित्रों की भाषा भी कहा जाता है, क्योंकि कुछ इशारे उन वस्तुओं की उपस्थिति से मिलते-जुलते हैं जिनका वे प्रतिनिधित्व करते हैं (उदाहरण के लिए, "घर" शब्द दिखाने के लिए, दो हथेलियाँ छत के रूप में जुड़ी हुई हैं)। सच है, दोनों राय केवल आंशिक रूप से सही हैं। तथ्य यह है कि अधिकांश हावभाव किसी भी तरह से संबंधित वस्तुओं के समान नहीं होते हैं। यह अमूर्त अवधारणाओं के लिए विशेष रूप से सच है। उदाहरण के लिए, रूसी सांकेतिक भाषा में "धन्यवाद" कहने के लिए, आपको पहले अपने माथे को बंद मुट्ठी से छूना चाहिए और फिर अपनी ठुड्डी को छूना चाहिए।

एक विशेष डैक्टिल वर्णमाला भी विकसित की गई है - अक्षरों के अनुरूप हाथ के संकेतों की एक प्रणाली। यदि प्रत्येक शब्द को इसकी सहायता से व्यक्त किया जाता है, तो इस मामले में विचार की अभिव्यक्ति में बहुत समय लगता है।[25]

ऐसी गतिज भाषाएँ (क्यूबा, पुर्तगाली, स्पैनिश) हैं, जहाँ चेहरे के भाव प्रमुख भूमिका निभाते हैं, यह बहुत अधिक अभिव्यंजक है। आमतौर पर यह उन राष्ट्रीयताओं में निहित है जो अपने आप में अपने मनोविज्ञान में अधिक भावुक हैं। लेकिन मिमिक्री भी मुख्य रूप से एक व्याकरणिक कार्य करती है। इसकी मदद से आप किसी प्रश्न को कमांड से, स्टेटमेंट से अलग कर सकते हैं। [26,27]

संदर्भ

1. स्टोको, सी. विलियम (1976). डिक्शनरी ऑफ़ अमेरिकन साइन लैंग्वेज ऑन लिंग्विस्टिक प्रिंसिपल्स . लिन्स्टोक प्रेस. ISBN 0-932130-01-1.
2. ↑ स्टोको, सी. विलियम (1960). साइन लैंग्वेज स्ट्रक्चर: एन आउटलाइन ऑफ़ द विजुअल कम्प्यूनिकेशन सिस्टम्स ऑफ़ द अमेरिकन डेफ़. स्टडीज़ इन लिंग्विस्टिक्स: अकेशनल पेपर्स (नं. 8). बफ़ेलो: मानव-विज्ञान और भाषा विज्ञान विभाग यूनिवर्सिटी ऑफ़ बफ़ेलो.
3. ↑ Bauman, Dirksen (2008). Open your eyes: Deaf studies talking. University of Minnesota Press. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 0816646198.
4. ↑ बेबीलोनियन तल्मूड गिटिन फ़ोलियो 59a
5. ↑ कैन्लास (2006).
6. ↑ Cf. सुपल्ला टेड और रेबेका वेब (1995). "द ग्रामर ऑफ़ इंटरनेशनल साइन: ए न्यू लुक एट पिडजिन लैंग्वेजस." : में, एमोरे, करेन और जूडी रेली (सं). लैंग्वेज, जेस्चर, एंड स्पेस. (इंटरनेशनल कॉन्फ़रेन्स ऑन थियरेटिकल इश्यूज़ इन साइन लैंग्वेज रीसर्च) हिल्सडेल, एन.जे.: अर्लबाम, पृ. 333-352, मॅककी आर. एंड जे. नेपियर जे. (2002). "इंटरप्रेटिंग इन इंटरनेशनल साइन पिडजिन: एन एनालिसिस". जर्नल ऑफ़ साइन लैंग्वेज लिंग्विस्टिक्स 5 (1).
7. ↑ इस बाद की धारणा पर अब कोई विवाद नहीं जैसा कि इस तथ्य से देखा जा सकता है कि संकेत भाषा विशेषज्ञ अधिकांशतः भाषाविद् हैं।
8. ↑ जॉनस्टन (1989).
9. ↑ माइंड एट लाइट स्पीड, डेविड डी.नोल्टे, पृ. 105-6
10. ↑ नाकामुरा (1995).
11. ↑ फ़िशबर्ग (1987). संकेत भाषा स्वरयंत्रउत्पत्ति-ग्रंथ में विशिष्ट शब्दावली के प्रोटोटाइप के रूप में सामान्य मुद्दे के लिए विटमैन का वर्गीकरण भी देखें.
12. ↑ NSR [1] Archived 2012-01-18 at the Wayback Machine और SFS [2] Archived 2008-09-21 at the Wayback Machine के तहत गॉर्डन देखें (2008).
13. ↑ हेनरी विटमैन (1991). वर्गीकरण को आनुवंशिक व्याख्येय प्रतीकात्मक संतोषजनक जैकबसन स्थिति कहा जाता है।
14. ↑ विटमैन का वर्गीकरण एथ्नोलॉग डेटाबेस में चला गया है जहां यह अभी भी उद्धृत किया जाता है। [3] Archived 2008-07-25 at the Wayback Machine 1992 में एथ्नोलॉग के बाद के संस्करण में यह 81 संकेत भाषाओं तक जा पहुंचा और अंत में प्राथमिक और वैकल्पिक संकेत भाषा (अंततः स्टोको के 1974 पर वापसी सहित) के बीच विटमैन के अंतर को और, अधिक अस्पष्ट रूप से, उनके अन्य लक्षणों को अपनाया गया। एथ्नोलॉग के 15वें संस्करण के 2008 संस्करण में अब संकेत भाषाएं 124 हैं।
15. ↑ जिस हद तक व्हिटमैन के भाषा कोड SIL कोड से अलग हैं, परवर्ती कोड कोष्ठकों में दिए गए हैं
16. ↑ विटमैन कहते हैं कि यह वर्गिकी मानक किसी वैज्ञानिक कठोरता के साथ वास्तव में प्रयोज्य नहीं है: वैकल्पिक संकेत भाषाएं, उस हद तक कि वे पूर्णतः प्राकृतिक भाषाएं हैं (और इसलिए इस सर्वेक्षण में शामिल किए गए हैं), अधिकांशतः बधिरों द्वारा भी उपयोग में लाए जाते हैं और कुछ वैकल्पिक संकेत भाषाएं (जैसे कि ASL (ase) और ADS).
17. ↑ विटमैन इस श्रेणी में ASW (जिसमें कम से कम 14 अलग भाषाएं शामिल हैं), MOS(mzg), HST (LSQ>ASL(ase)-व्युत्पन्न TSQ से अलग) और SQS को जोड़ते हैं। इस बीच 1991 के बाद से, HST को BFK, CSD, HAB, HAF, HOS, LSO से संरचित माना गया है।
18. ↑ विषय पर विटमैन के संदर्भ में, उनके अपने "मौखिक संकेत" भाषाओं में क्रियोलीकरण और शाब्दिक प्रतिस्थापन पर कार्य के अलावा, संकेत भाषाओं में क्रियोलीकरण पर फ़िशर (1974, 1978), ड्यूशर (1987) और जूडी केगल के 1991-पूर्व कार्य जैसे लेख शामिल हैं।
19. ↑ इसके लिए विटमैन का स्पष्टीकरण यह है कि संकेत भाषाओं के लिए अधिग्रहण और पारेषण के नमूने प्रत्यक्ष प्रसारण के किसी ठेठ अभिभावक-बच्चे के संबंध मॉडल पर आधारित नहीं है, जो बहुत हद तक बदलाव और परिवर्तन को प्रेरित करते



हैं। वे नोट करते हैं कि संकेत क्रियोल मौखिक क्रियोल की तुलना में ज़्यादा आम हैं और हम नहीं जान सकते हैं कि उनकी ऐतिहासिकता से पहले कितने क्रमिक क्रियोलीकरण प्रोटोटाइप-A संकेत भाषाएं आधारित हैं।

20. ↑ ब्रेनटरी, डायने (1998): सांकेतिक भाषा के स्वर विज्ञान का एक छंदशास्त्रीय मॉडल. केम्ब्रिज, एम.ए.: एमआईटी प्रेस, होहेनबर्गर (2007) में पृ. 349 पर उद्धृत.
21. ↑ ब्रेनटरी, डायने (2002): संकेत भाषा स्वर-विज्ञान और संरचना-ध्वनिक रूपात्मक अंतर. :में, रिचर्ड पी. मेइअर, कियर्सी कोरिमियर और डेविड क्विटो-प्रोजोक्स (सं.), 35-36, होहेनबर्गर (2007) में पृ. 349 पर उद्धृत.
22. ↑ होहेनबर्गर, एनेटे: संकेत भाषाओं के बीच संभाव्य भिन्नता की सीमा: वैश्विक व्याकरण, रूपात्मकता और प्रतीकात्मक पहलुएं; में: पर्निस, पैमेल एम., रोलैंड फ़ो और मार्कस स्टेनबैक (सं.): दृश्य रूपांतरण. संकेत भाषा की संरचना पर तुलनात्मक अध्ययन, (रेइहे भाषाविज्ञान में रुझान. अध्ययन और मोनोग्राफ [TiLSM] 188). बर्लिन, न्यूयॉर्क: माउटन डे ग्रुटर 2007
23. ↑ बेल लेबोरेटरीज रिकॉर्ड (1969) AT&T पिक्चरफ़ोन पर अनेक लेखों का संग्रह Archived 2012-06-23 at the Wayback Machine (तब विमोचन के लिए तैयार) बेल लेबोरेटरीज, पृ.134-153 तथा 160-187, खंड 47, सं. 5, मई/जून 1969;
24. ↑ सूज़न गोल्डिन-मीडो (गोल्डिन-मीडो 2003, वैन ड्युसेन, गोल्डिन-मीडो और मिलर 2001) ने घरेलू संकेत प्रणालियों पर व्यापक काम किया है। एडम केंडन (1988) आइकनिसिटी पर विशेष ज़ोर देते हुए पापुआ न्यू गिनी हाईलैन्ड्स से बधिर एंगा महिला पर प्रारंभिक अध्ययन प्रकाशित किया है।
25. ↑ हेवेस (1973) प्रीमैक एंड प्रीमैक (1983), किमुरा (1993), न्यूमैन (2002), विटमैन (1980, 1991)
26. ↑ कोल्ब और व्हिश् (2003)
27. ↑ प्रीमैक एंड प्रीमैक (1983), प्रीमैक (1985), व्हिटमैन (1991).



INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 8.118



ISSN INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA



INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

 **9940 572 462**  **6381 907 438**  **ijirset@gmail.com**



www.ijirset.com

Scan to save the contact details